3. प्रस्तुत चित्र में दी गई स्थिति/घटना के आधार पर दृश्य-लेखन कीजिए–

उत्तर–2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष हम महात्मा गाँधी का जम्मदिन मनाते हैं। इस बार हमारे स्कूल के प्रधानचार्य जी ने 2 अक्टूबर को 'स्वच्छता दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। उनके इस निर्णय से सभी प्रसन्न और उत्साहित हुए। सभी ने तालियाँ बजाकर उनके इस निर्णय का स्वागत किया।

दिन भर स्वच्छता से संबंधित अनेक कार्यक्रम हुए। अध्यापकों ने स्वच्छता से संबंधित अनेक प्रकार की जानकारियाँ दीं। प्रधानाचार्य जी ने बताया कि स्वच्छ जीवन जीने के लिए स्वयं स्वच्छ रहना और अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना अत्यंत आवश्यक है। स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और 'स्वस्थ राष्ट्र निर्माण' में योगदान देता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में स्वच्छता अपनानी चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। किसी को भी खुले में शौच आदि नहीं जाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से अनेक बीमारियाँ जैसे-हैजा, पेचिस, पोलियो, टाइफाईड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं। हमें खाना खाने से पूर्व हाथों को अच्छी प्रकार से साफ करना चाहिए। नित्य प्रति के जीवन की छोटी-छोटी बातों

को ध्यान में रखकर भी स्वस्थ रहा जा सकता है। घर हो या स्कूल हर जगह स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। इसके बारे में समय-समय पर बच्चों को जानकारियाँ देते हुए जागरूक करते रहना चाहिए। भोजनावकाश के बाद सभी विद्यार्थी, अध्यापक और कर्मचारी, उत्साहपूर्वक सफाई अभियान में जुट गए। कुछ बच्चे गमलों और पौधों के बीच से सूखी और सड़ी हुई पत्तियों आदि को निकाल रहे थे तो कुछ फावड़े और खुरपियों आदि की सहायता से नाली की मिट्टी को निकालने का काम कर रहे थे। मैदान में बिखरी पत्तियों को एक जगह एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों ने मैदान में झाड़ू लगाई फिर प्रार्थना स्थल को भी साफ करके वहाँ की धुलाई की जिसमें शिक्षकों और कर्मचारियों ने भी सहयोग किया। कुछ छात्राओं ने गमलों पर भी रंग से पुताई की।

स्कूल के प्रधानाचार्य महोदय पूरे स्कूल में हो रहे स्वच्छता अभियान में विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन करने के साथ ही उत्साहवर्धन भी कर रहे थे। छोटी-छोटी टोकरियों से बच्चे कूड़ा उठाकर कूड़े की ट्राली में डाल रहे थे जिसमें बड़े बच्चे उनकी सहायता कर रहे थे।

दो घंटे में ही पूरे स्कूल की काया पलट हो गई। विद्यालय का हर कोना चमक रहा था। अपनी मेहनत रंग लाते देख सभी के चेहरे प्रसन्नता से चमक रहे थे। किसी को अपने कपड़े गंदे होने की चिंता नहीं थी।

4 बजे सफाई अभियान की समाप्ति की घोषणा हेतु घंटी बजाई गई। सभी अपना कार्य समाप्त कर शीघ्रता से बड़े मैदान में एकत्रित हो गए। प्रधानाचार्य जी ने सभी की प्रशंसा की। सभी को जलपान वितरित किया गया और सभी की सहमति से प्रत्येक शनिवार को भोजनावकाश के बाद का समय 'स्वच्छता अभियान' के लिए निर्धारित किया गया।

प्रस्तुत चित्र में दी गई घटना के आधार पर दृश्य लेखन करिए—

उत्तर—वास्तव में उपर्युक्त चित्र को देखकर हम संवेदनशील हो उठते हैं तुरंत ही हमारा मस्तिष्क कहता है इस छोटी-सी उम्र में इस नन्हें से बालक को यह कार्य नहीं करना चाहिए। यह उम्र इस बच्चे की पढ़ने और खेलने कूदने की है। परिवार का या स्वयं का भरण-पोषण करने की नहीं, किंतु बाल-मजदूरी एक ऐसा कड़ुवा सच है जिससे भारत ही नहीं पूरी दुनिया त्रस्त है।

आज भी हमारे देश में लाखों बच्चे बाल-श्रम की चपेट में हैं। उन्हें बचपन में किताबें व खिलौने से खेलने के स्थान पर मजदूरी करनी पड़ रही है। ऐसे बाल-श्रमिक घरों, कारखानों, होटलों, ढाबों, दुकानों पर मजदूरी करते देखे जा सकते हैं। इन बाल-श्रमिकों को सुबह से लेकर रात तक कठोर परिश्रम करना पड़ता है। कई प्रकार की डाँट-फटकार सहनी पड़ती है। विषम परिस्थितियों में काम करने से इनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, लेकिन इन्हें विवश होकर ये सब सहना पड़ता है।

भारतीय संविधान के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से कारखानों, दुकानों, रेस्तरां, होटल, कोयला खदान, पटाखे के कारखानों आदि जगहों पर कार्य करवाना बाल श्रम कहलाता है। बालश्रम में बच्चों का शोषण भी शामिल होता है बाल-शोषण से आशय है बच्चों से ऐसे कार्य करवाने से जिसके लिए वे मानसिक रूप से तैयार न हो। भारतीय संविधान बच्चों को वे सभी अधिकार देता है जो कि एक आम नागरिक के होते हैं तो फिर क्यों वे बच्चे पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना छोड़कर मजदूरी करने को विवश हैं। जिन हाथों में कलम पकड़ना था वे क्यों ब्रश और पॉलिश पकड़े हुए हैं। जिन हाथों से वह अपना भविष्य सुदृढ़ बना सकता है उन हाथों से उसे जूता पॉलिश क्यों करना पड़ रहा है? उनकी नन्हीं आँखों में चलते सपनों को तोड़ने का जिम्मेदार कौन है? हमें यह समझना होगा क्योंकि बच्चे देश का भविष्य है और देश के भविष्य को सँवारने सँभालने की जिम्मेदारी भी संपर्ण देश की है जिसमें सरकार ही नहीं आम नागरिक भी शामिल है।